ISSN : 2582-9092

हरिद्रा

(सांस्कृतिक शोध का अन्तराष्ट्रिय उपक्रम)

A Reviewed/Refereed Research Journal

अप्रैल–जून 2021 ‖ त्रैमासिक ‖ वर्ष 2 ‖ अंक 5 ‖ इन्दौर

300रु.

वे गणेश जी द्वारा ही दत्त थे

– डॉ. मंगल मिश्र

गणेश अथर्व शीर्ष में भगवान गणेश को ब्रह्मा, विष्णु, सदाशिव, इंद्र, अग्नि, वायु, सूर्य, चंद्रमा और तीनों शक्तियों का सम्मिलित स्वरूप कहा गया है।

जब परिवार पर गणेश जी की कृपा होती है, तभी गणेशदत्त त्रिपाठी जैसे ज्ञान– रत्न का जन्म होता है। अत्यंत संस्कारी और धर्मानुरागी परिवार में जन्मे संस्कृत और दर्शनों के विद्वान महामहोपाध्याय षड्दर्शनतीर्थ पंडित नारायणदत्त जी त्रिपाठी के सुपुत्र, साहित्य महोपाध्याय प्रो. गणेशदत्तजी त्रिपाठी, विद्या और ज्ञान के मामले में मानो गणेश जी के ही प्रत्यक्ष आशीर्वाद स्परूप थे। वे आशुतोष भी थे और परशुराम भी। वे ज्ञानमूर्ति थे और तपमूर्ति भी। वे स्वाध्याय प्रेमी थे और अप्रतिम शिक्षक भी। वे असाधारण लेखक थे और अद्वितीय वक्ता भी। वे स्पष्टवादी और प्रचंड स्वाभिमानी थे। साथ ही अत्यंत विनम्र और मृदुभाषी भी। परमात्मा ने मानो आदर्श विद्वान के सभी गुण कूट–कूट कर उनमें भरे थे।

आगरा विश्वविद्यालय से एम. ए. हिन्दी साहित्य करने के पश्चात उन्होंने साहित्य रत्न और व्याकरणतीर्थ जैसे सम्मान अर्जित किए। न्याय, सांख्य और वेदांत के अध्ययन के प्रति उनकी आनुवंशिक रूचि थी और उसमें भी वे निष्णात हुए। सूरत, नागपुर, मुंबई, ग्वालियर, रायगढ़, रतलाम, जावरा, नीमच, खरगोन और इंदौर के विभिन्न महाविद्यालयों में व हिन्दी के अत्यंत लोकप्रिय प्राध्यापक रहे। देश के अनेक विश्वविद्यालयों में वे 40 वर्ष से अधिक समय तक विशेषज्ञ के रूप में सेवाएं देते रहे। देवी अहिल्या विश्वविद्यालय में तो शायद ही कोई ऐसा कार्य रहा होगा, जिसमें उनकी उपस्थिति रेखांकित नहीं हुई हो। हिन्दी के विद्वान होते हुए भी वे आयुर्वेद, चिकित्सा, समाजविज्ञान, शिक्षाविज्ञान, जीवन विज्ञान, वाणिज्य और व्यावसाय प्रबंध संकायों से विद्या परिषद में निर्वाचित हुए। हिन्दी साहित्यकारों की अनेक संस्थाओं में उन्होंने महत्वपूर्ण पदों को पूरी जिम्मेदारी के साथ वहन किया।

देश के लगभग सभी प्रतिष्ठित समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में उनके नियमित लेख और राजनैतिक विश्लेषण लगातार प्रकाशित हुए।

वे वैदिक और सनातन संस्कृति के पुरोधा थे और उन्होने सभी अवसरवादियों को जमकर फटकार लगाई। देश के 50 से अधिक विश्वविद्यालयों में असंख्य व्याख्यान देने वाले त्रिपाठी जी अनेक पुस्तकों के लेखक रहे, जिन्होंने 50 से अधिक विद्यार्थियों को विद्या–वाचस्पति उपाधि हेतु मार्गदर्शन भी दिया।

वे अद्वितीय वक्ता थे और उन्होंने अनेक वाद–विवाद स्पर्धाओं मे वक्ताओं को प्रशिक्षित किया। अपने असाधारण ज्ञान के कारण वे किसी भी विषय पर तत्काल पक्ष और विपक्ष में विद्यार्थियों को बोलना सिखा देते थे। उनका लेखन मानो साक्षात् सरस्वती की कृपा का प्रतिफल था। असंख्य साहित्यकारों की रचनाओ का उन्होंने गंभीर अध्ययन किया था, लेकिन महाकवि भूषण से उन्हें विशेष स्नेह था। अनेक अवसरों पर उन्होंने भूषण की कविताएं प्रतीक बनाकर छत्रपति शिवाजी महाराज के जीवन का ऐसा चित्रण किया कि श्रोता लगातार ताली बजाने पर विवश हो जाते थे और उन्हें माईक से हटने की अनुमति नहीं मिलती थी। उनकी प्रस्तुती इतनी कलात्मक होती कि श्रोता उनकी रस धारा में बह जाते थे।

अपनी बहुमुखी प्रतिभा, अद्वितीय लेखन और श्रेष्ठतम वाणी कौशल के उपरांत भी वे विद्यार्थियों के लिए सदैव सुलभ बने रहे। कमजोर विद्यार्थियों को उनके स्तर पर उतरकर पढ़ाना, जटिलतम साहित्यिक रचनाओ को सरलतम तरीके से समझाना, उनकी विशेषताएं थी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी गणेशदत्त जी ने पूरा जीवन सरल और विनम्र रहकर जिया। सच को सच कहने का उनका साहस अनुकरणीय था। वे कभी किसी से भयभीत नहीं हुए, लेकिन उन्होंने न तो कभी शब्दों की मर्यादा छोड़ी, न कभी विनम्रता का परित्याग किया।

उनकी असहमति भी सरलता और दृढ़ता के साथ होती थी। पर उसमें अहंकार का लेशमात्र भी नहीं होता था। ऐसे अद्वितीय लेखक, कवि, विचारक और अप्रतिम शिक्षक पूज्य त्रिपाठी जी के श्रीचरणों में सादर नमन।

– प्राचार्य, श्री क्लॉथ मार्केट कन्या वाणिज्य महाविद्यालय, इंदौर

हरिद्रा

(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)

ISSN : 2582-9092

त्रैमासिक | वर्ष: 2 | अंक: 5 | इन्दौर | अप्रैल–जून 2021 | चैत्र–ज्येष्ठ | विक्रम संवत् 2077

ग्रीष्म अंक

सम्पादक

अभिजीत त्रिपाठी

प्रबंध सम्पादक

डॉ. विकास दवे

मार्गदर्शक

महामहोपाध्याय पण्डितराज आचार्य मिथिला प्रसाद त्रिपाठी

(पूर्व कुलपति, महर्षि पाणिनि संस्कृत एवं वैदिक वि.वि., उज्जैन)

स्वर्ण पदक- एम.ए. संस्कृत/कला संकाय/एम.ए.हिन्दी, राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित- कालिदास अलंकरण पुरस्कार राष्ट्रपति पुरस्कार/साहित्य अकादमी पुरस्कार/ अखिल भारतीय सर्वभाषा पुरस्कार/कालिदास संस्कृतवती राष्ट्रीय पुरस्कार एवं महामहोपाध्याय, पण्डितराज, वैभवभूषण उपाधियों से अलंकृत

सम्पादक मण्डल

डॉ. दीपक शर्मा

(कुलपति, कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत व पुरातन अध्ययन वि.वि., नलबारी आसाम)

E-mail : kbvsasun@rediffmail.com

डॉ. राजेश लाल मेहरा

(पूर्व प्रा. शा.कला एवं विज्ञान महा., रतलाम)

E-mail : profrajeshmehra441@gmail.com

डॉ. श्यामसुंदर पाण्डेय

(विजिटिंग प्रोफेसर, टोक्यो युनिवर्सिटी ऑफ फारेन स्टडीज, टोक्यो, जापान)

E-mail : sspandey1@gmail.com

प्रो. गणपति रामनाथ

(रेनेसेलर पोलीटेक्नीक इंस्टीट्यूट, ट्रॉय, न्यूयार्क, अमेरिका)

E-mail : ramanath@rpi.edu

डॉ. मंगल मिश्र

प्राचार्य, क्लॉथ माकेट वाणिज्य महा. बडा गणपति, इन्दौर

E-mail : scmkvm.indore.mp@gmail.com

डॉ. अरूणा कुसुमाकर

(प्राचार्य शा. संस्कृत महाविद्यालय, रामबाग, इन्दौर)

E-mail : sanskritcollege.indore@gmail.com

डॉ. योगेन्द्र नाथ शुक्ल

प्रोफेसर एवं अध्यक्ष हिन्दी विभाग

(निर्भयसिंह पटेल शा. विज्ञान महाविद्यालय, ए.बी.रोड़, इन्दौर)

E-mail : ynshukla4@gmail.com

सम्पर्क

महोपाध्याय पं. गणेशदत्त त्रिपाठी शैक्षणिक, धार्मिक, पारमार्थिक न्यास

३१८, प्रोफेसर कॉलोनी, सपना–संगीता रोड़, इन्दौर (म.प्र.) ई-मेल : haridra5@outlook.com

हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)

रिव्यूअर बोर्ड

ISSN : 2582-9092

संस्कृत - डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी (पूर्व कुलपति राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली)
संस्कृत - डॉ. नरेन्द्र कुमार एल. पण्ड्या (प्राचार्य श्री सोमनाथ संस्कृत युनिवर्सिटी, संचालित कॉलेज, वेरावल, गुजरात)
संस्कृत - डॉ. भगतवशरण शुक्ला (विभागाध्यक्ष व्याकरण विभाग, फेकल्टी संस्कृत विद्या धर्म विज्ञान, बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय)
संस्कृत - डॉ. नीलाभ तिवारी (प्रा. राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, भोपाल)
हिन्दी - डॉ. शिवकुमार शुक्ला (प्रा. हिन्दी विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज)
हिन्दी - डॉ. कविता भट्ट (रिसर्च एसोसिएट फे.डे.से. हे.नं. बहुगुणा केन्द्रीय वि.वि. श्रीनगर)
हिन्दी - डॉ. स्नेहलता श्रीवास्तव (पूर्व प्रा. दे.अ.वि.वि. इन्दौर)
हिन्दी - डॉ. मनोज पाण्डेय (प्रा. नागपुर वि.वि.)
हिन्दी - डॉ. नरेन्द्र मिश्र (प्रा. जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर)
आयुर्वेद - डॉ. महेश व्यास (डीन.(पीएच-डी.) अ.भा. आयुर्वेद संस्थान, आयुष मंत्रालय, भारत सरकार)
आयुर्वेद - डॉ. सोमेन्द्र मिश्र (अष्टांग आयुर्वेदिक महा. इन्दौर)
आयुर्वेद - डॉ. लोकेश जोशी (प्रांत सचिव आरोग्य भारती, इन्दौर)
राजनीति विज्ञान - डॉ. अश्विनी शर्मा (प्रा. शा. अटल बिहारी वाजपेयी महा. इन्दौर)
राजनीति विज्ञान - डॉ. उषा सोलंकी (प्राचार्य शा.महा. रायसेन)
अंग्रेजी - डॉ. प्रीति भट्ट (निर्भयसिंह पटेल शा. विज्ञान महाविद्यालय, इन्दौर)
समाज विज्ञान - डॉ. कविता मंगलम् (प्रा. कालिदास कन्या महा. उज्जैन)
योग - डॉ. हेमंत शर्मा (प्रा. शा. अटल बिहारी बाजपेयी महा., इन्दौर)
योग - डॉ. संजय लोंढे (योगाचार्य, इन्दौर)
इतिहास - डॉ. भावना व्यास (प्रा. एल्युमिनी नेशनल म्यूजियम इंस्टिट्यूट, वृंदावन शोध संस्थान)
इतिहास - डॉ. अनिल पुरोहित (प्रा. महिला पी.जी. महाविद्यालय, जोधपुर)
नृत्य - डॉ. सुचित्रा हरमलकर (प्रा. दे.अ.वि.वि. इन्दौर)
चित्रकला - प्रो. राजाराम शर्मा (पूर्व निदेशक भारत भवन, कलाकर्मी आलोचक)
कृषि - डॉ. एस.एन. उपाध्याय (निदेशक विस्तार सेवाएं, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि वि.वि.ग्वालियर)
कृषि - डॉ. के. एस. बांगर (प्रिंसिपल साईंट्स्ट, एस.ए.एस. प्रोजेक्ट, कृषि महाविद्यालय, इन्दौर)
पत्रकारिता - श्री श्रवण गर्ग (वरिष्ठ पत्रकार)
स्थापत्य कला - डॉ. विशाल यार्डी (डायरेक्टर आर्किटेक्चर – श्री वैष्णव विद्यापीठ विश्वविद्यालय, इंदौर)
स्थापत्य कला - श्री राजकुमार वासवानी (डायरेक्टर – एल.एस.वासवानी आर्किटेक्टस, इन्दौर)

ISSN : 2582-9092

सम्पादकीय...

आत्मीय बंधु भगिनी गण, 'हरिद्रा' पत्रिका का नवीन अंक आपके हाथों में है। यह अंक एक विशेष शुभ समाचार के साथ आप सबको सौंपते हुए हमें प्रसन्नता अनुभव हो रही है। कोई भी शोध पत्रिका अत्यधिक परिश्रम के पश्चात ही संपादित कर प्रकाशित की जाती है किंतु ऐसी शोध पत्रिकाएं तब तक पूर्णाकार प्राप्त नहीं कर पाती जब तक उसे आई एस एस एन पंजीयन क्रमांक प्राप्त ना हो जाए। हरिद्रा की संपूर्ण प्रकाशन टोली श्री अभिजीत जी त्रिपाठी के नेतृत्व में इस दुरूह कार्य को संपन्न करने में लगी थी। इस मध्य कोरोनाकाल में मुद्रण के सभी कार्य प्रभावित हुए थे। दैनिक समाचार पत्र, मासिक पत्रिकाएं और त्रैमासिक पत्रिकाएं भी इससे अछूती नहीं रह पाई। इस रिक्त समय का उपयोग पत्रिका के पंजीयन के लिए किया गया और प्रभु कृपा से सफलता भी प्राप्त हुई।

अब पुनः आप सब के शोध आलेखों को शोध प्रविधियों से जुड़े पाठकों तक पहुंचाने में अब हमको प्रसन्नता होगी। आप सबसे आग्रह है की उच्च गुणवत्ता वाले शोध परक आलेख हमें भेजिए। संपादन टोली आप सबको यह आश्वस्ति देती है की एक उच्च गुणवत्ता वाली शोध पत्रिका हम आपके हाथों में सौंपेंगे।

इस समय शोध कार्य और शोध प्रक्रिया पर सतत प्रश्न चिन्ह लगाए जा रहे हैं। यह प्रश्न चिन्ह इसलिए भी लगाए जाने लगे क्योंकि शोध करने वाले शोधार्थियों और शोध प्रबंधों की संख्या बहुत तेजी से बढ़ने लगी और शोध कार्यों की गुणवत्ता स्वाभाविक रूप से थोड़ी घटने लगी है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग सतत इस दिशा में नवाचार कर रहा है। शोध कार्यों की गुणवत्ता बढे इस हेतु इन सारे नवाचारों को शोध अध्येताओं को हृदय से स्वीकारना चाहिए तथा प्रयास करना चाहिए यह शोध कार्य यशस्वी हो सकें।

देश के प्रधानमंत्री जी भी सतत इस बात का आग्रह कर रहे हैं की 12वीं कक्षा के अध्ययन के पश्चात भारतीय विद्यार्थियों में शोध प्रवृत्ति विकसित होना प्रारंभ हो जाना चाहिए। इस निमित्त नई शिक्षा नीति में भी पर्याप्त अवसर पैदा किए गए हैं। आने वाले समय में हम सब पुनः सुखद परिस्थितियों को देखेंगे जब शोध कार्यों की गुणवत्ता अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार भारत में भी दिखाई देने लगेगी।

पुनः आप सब के सहयोग की कामनाओं सहित..... आपका ही

–डॉ. विकास दवे

हरिद्रा
(सांस्कृतिक शोध का अन्तर्राष्ट्रीय उपक्रम)

ISSN : 2582-9092

।। अनुक्रमणिका ।।

क्रमांक	शीर्षक	लेखक	पृष्ठ संख्या
01.	काव्य प्रकाश मनुसृत्य दोषविचार	पराग जोशी	3–6
02.	द्वैताद्वैतदर्शन के सन्दर्भ में बुद्धि तत्व समीक्षा	पवन कुमार पाराशर	7–13
03.	श्रीमद्देवीभागवत में निरूपित रस–विमर्ष	हिमेष तिवारी	14–19
04.	महाभारत सनत्सुजातीय उपाख्यान	डा. रामपाल शुक्ल	20–21
05.	वैश्विक महामारी और अथर्ववेदीय चिकित्सा पद्धति	डॉ. किरण आर्या	22–27
06.	कर्क लग्न में राजयोग	श्रीमती प्रज्ञा मनुभाई तन्ना	28–34
07.	प्रमुख उपनिषदों में नारीः एक विमर्श	डॉ. सारिका वार्ष्णेय	35–41
08.	भासकृत रूपकों में वैदिक वामन–विष्णु तथा बलि आख्यानः एक अध्ययन	डा. अशु राधा	42–44
09.	''उच्च शिक्षा में गुणवत्ता की आवश्यकता एक अध्ययन''	डॉ. अरूणा कुसुमाकर	42–47
10.	Role of English in the Modern Era	Dr. Sharda Singh	48–54